

## पद १४३

(राग: झिंजोटी – ताल: त्रिताल)

भज मन मेंरा रे जानकी रघुबीर ॥ध्रु.॥ राजा दशरथ के कुंवर  
कहावे । राहत शरजू के तीर ॥१॥ सागर पर पाषान जो तारे । उतरे  
सब कपिबीर ॥२॥ मानिक के मन ये मत छांड़िये । सुमरत रहो  
रणधीर ॥३॥